



हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों का तरलता संकट

चर्चा में क्यों?

हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों (Housing Finance Companies) के तरलता संकट (Liquidity Crisis) को देखते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक (Reserve Bank of India - RBI) ने यह निर्णय लिया है कि वह दैनिक आधार पर इन कंपनियों की तरलता स्थिति, परिसंपत्ति-देयता (Asset-Liability) का अंतर और पुनः भुगतान अनुसूची (Repayment Schedules) की निगरानी करेगा।

- तरलता संकट ऐसी वित्तीय स्थिति को दर्शाता है जिसमें तरलता प्रवाह में कमी आ जाती है। किसी एक कंपनी के लिये इसका अर्थ है कि उसके पास तरलता परिसंपत्तियों की कमी हो जाना जिसके परिणाम स्वरूप कंपनी अपने ज़रूरी कार्य जैसे कर्मचारियों के वेतन, ऋणों के भुगतान आदि को भी चुकाने की स्थिति में नहीं होती।

मुख्य बूढ़ि

- सामान्यतः इस प्रकार की कंपनियों को **राष्ट्रीय आवास बैंक (National Housing Bank- NHB)** द्वारा वनियमिती और संचालिती कयिा ज़ाता है, परंतु चूँकि इनका तरलता संकट बैंकों सहिती वित्तीय क्षेत्र के अनूय हसिंसों को भी प्रभावति कर सकता है और इससे अर्थव्यवस्था की वित्तीय स्थरिता में भी परिवर्तन आने की संभावना होती है, ऐसे में RBI द्वारा इन पर नज़र रखना आवश्यक हो जाता है।
- इस कार्य के लयि NHB के जनरल मैनेजर को RBI के **गैर-बैंकिग पर्यवेक्षण वभिाग (Department of Non-Banking Supervision)** के मुखय महाप्रबंधक के साथ नयिमति संचार और सहयोग करने लयि कहा गया है।
- IL&FS** के **डिफ़ॉल्टर** हो जाने के बाद से गैर-बैंकिग वित्तीय क्षेत्र, बैंकों के साथ वशिवास के संकट (Trust Deficit) से जूझ रहा है।
- RBI ने NBFS के संकट से जूझते हुए अर्थव्यवस्था की वित्तीय स्थरिता को बनाए रखने पर ज़ोर दयिा है।

राष्ट्रीय आवास बैंक

(National Housing Bank- NHB)

- NHB की स्थापना संसदीय अधनियमिती के अंतर्गत वर्ष 1987 में की गई थी।
- इसकी स्थापना का मुखय उद्देश्य स्थानीय और क्षेत्रीय दोनों स्तरों पर हाउसिंग फाइनेंस संस्थानों को बढ़ावा देना है।
- NHB हाउसिंग फाइनेंस संस्थानों को वित्तीय और अनूय सहायता प्रदान करने वाली एक प्रमुख संस्था के रूप में कार्य करती है।
- NHB हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों का पंजीकरण, वनियमन और संचालन भी करता है।

गैर-बैंकिग वित्तीय कंपनी (NBFC)

- गैर-बैंकिग वित्तीय कंपनी उस संस्था को कहते हैं जो कंपनी अधनियमिती 1956 के अंतर्गत पंजीकृत होती है और जसिका प्रमुख कार्य उधार देना तथा वभिन्न प्रकार के शेयरों, प्रतभूतियों, बीमा कारोबार तथा चटिफंड से संबंधिती क्षेत्र में नविश करना होता है।
- गैर-बैंकिग वित्तीय कंपनियों भारतीय वित्तीय प्रणाली में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।
- यह संस्थाओं का वजितीय समूह है (वाणजियकि सहकारी बैंकों को छोड़कर) जो वभिन्न माध्यमों से वित्तीय मध्यस्थता का कार्य करता है जैसे –
 - जमा स्वीकार करना
 - ऋण और अग्रमि देना
 - प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में नधियों जुटाना
 - अंतिमि व्ययकर्त्ता को उधार देना
 - थोक और खुदरा व्यापारियों तथा लघु उद्योगों को अग्रमि ऋण देना।

स्रोत: द हिंदू

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/rbi-begins-monitoring-hfcs>